---

09 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पूर्ण पवित्रता का श्रृंगार

➢➢ सम्पूर्ण पवित्रता ही विशेष पार्ट बजाने वालों का श्रृंगार है

➳ _ ➳ मैं विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ...

→ मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूँ...

→ स्वयं भगवान् ने मुझे अपना साथी बनाया है...

→ मैं भगवान के साथ विशेष पार्ट बजा रही हूँ...

→ मैं आत्मा हर परिस्थिति में साक्षी होकर अपना हीरो पार्ट बजा रही हूँ...

→ मैं आत्मा सदा 'साक्षी और साथीपन' की विशेषता को स्मृति में रखती हूँ...

- ■ मैं श्रेष्ठ बाप की श्रेष्ठ संतान हूँ...
- ■ इसी शुद्ध नशे में मैं आत्मा बाबा की कुटिया में पहुंच जाती हूँ...

➳ _ ➳ सम्पूर्ण पवित्रता ही मेरा श्रृंगार है...

→ मीठे बाबा मुझे अपनी गोदी में लेकर मेरा श्रृंगार कर रहे हैं...

→ प्यारे बाबा अपनी पवित्रता के सफ़ेद रंग से मुझे रंग रहे हैं...

→ पवित्रता के चमकीले रंग से मैं आत्मा पूरी तरह सराबोर हो रही हूँ...

- ■ मुझ आत्मा से 63 जन्मों की सम्पूर्ण विकारों की कालिक मिट रही है...
- ■ संकल्पों से भी अपवित्रता का अंश मिट गया है...
- ■ मेरे बाबा जन्म-जन्मांतर के लिए मेरा अविनाशी श्रृंगार कर रहे हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा श्रृंगार की हुई मूर्त अर्थात् सदा पवित्र स्वरूप हूँ...

→ मैं आत्मा हर सेकंड, हर संकल्प से पवित्र स्वरुप का पार्ट बजा रही हूँ...

→ सेकेण्ड-सेकेण्ड का अटेंशन रख रही हूँ...

→ सदा समर्थ संकल्प ही करती हूँ...

→ संगम युग रिकॉर्ड भरने का युग है...

→ जैसा पार्ट अभी मैं बजाउंगी जन्म-जन्मांतर के लिए वही रिकॉर्ड हो जाएगा...

→ मैं आत्मा हर जन्म के संस्कारों का श्रेष्ठ रिकार्ड स्वयं में भर रही हूँ...

→ सम्पूर्ण पवित्रता का श्रृंगार कर रिकॉर्ड भर रही हूँ...

→ हर प्रकार के टेंशन से परे होकर बहुत ही अच्छा रिकॉर्ड भर रही हूँ...

→ नालेजफुल आत्मा बन क्यों, क्या जैसे टेंशन के शब्दों को अपनी बुद्धि से सदा के लिए निकाल दी हूँ...

■ मैं आत्मा ऑलमाइटी अथॉरिटी की संतान हूँ...

■ मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ...

■ संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा हूँ...

■ सदा अपने श्रेष्ठ स्वमानों में स्थित रहकर हर टेंशन से मुक्त हो गई हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा नॉलेजफुल स्थिति में स्थित रहती हूँ...

→ मैं आत्मा सदा राइट और रॉंग को जानकर हर कर्म कर रही हूँ...

→ मैं आत्मा सदा हंस आसन पर विराजमान रहती हूँ...

■ सदा शुद्ध संकल्पों का भोजन ही ग्रहण करती हूँ...

■ सदा ज्ञान के मोती ही चुगती हूँ...

■ सदा गुणों को ही धारण करती हूँ...

■ सदा स्वच्छता और पवित्रता पर विशेष अटेंशन रखती हूं...

■ सदा ज्ञान की वीणा बजाते रहती हूँ...

➳ _ ➳ मैं मायाजीत और प्रकृति जीत आत्मा हूँ...

→ प्रकृति का कोई भी तत्व मुझे हलचल में नही ला सकता है...

→ सभी तत्व मेरे अधीन हैं..

→ मैं आत्मा सदा अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहती हूँ...

■ मेरी स्थिति किसी भी साधनों पर आधारित नही है...

■ प्रकृति के हर पेपर को सहज ही पार कर रही हूँ...

■ पास विद आनर बन रही हूँ...

■ सदा अचल अडोल रहकर सफलता मूर्त बन रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा एक बाप के प्यार में एकरस रहती हूँ...

→ एक बाबा ही मेरा संसार है...

→ एक बाबा ही सहारा है...

→ मेरा अविनाशी साथी है...

■ इस संगमयुग में बाबा के संग-संग पार्ट बजा रही हूँ...

■ मैं आत्मा सदा विशेष पार्ट धारी होने की स्मृति में रहकर सम्पूर्ण पवित्रता को धारण किए हुए रहती हूँ...